कल्पना !!

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

कल्पना अनंत आकाश में चारो तरफ फैलने वाली एक ऐसी तरंगें हैं जिसे रोक पाना इंसान के वश में नहीं है। अपनी इसी गति और वेग के कारण यह दृश्य-अदृश्य सभी लोकों का विहार करती है। मन की असीम ऊर्जा शक्ति और क्षमता के अनुरूप ही कल्पनाओं का निर्माण होता है। कल्पनाओं का ख्याल तो किया जा सकता है परन्तु उसे पूरा करना मुश्किल होता है। सुख और दुःख इन्हीं कल्पनाओं का परिणाम है। अगर कल्पना न हो तो सुख और दुःख दोनों नहीं होंगे। कल्पनाओं का सार्थक उपयोग सीख लिया जाए तो इसकी सार्थकता सामने लायी जा सकती है। बहुत सारे मनोविश्लेषकों का मानना है कि कल्पना शक्ति मनुष्य की एक दिव्य क्षमता है। इसके माध्यम से वो विराट चीज़ों को हासिल कर सकता है।

कल्पनाएं मन में उठने वाली ऐसी तरंगें होती हैं जिनको यदि क्रमबद्ध नहीं किया गया तो परिणाम बड़ा दुःखद होता है। आजकल मनुष्य के मन में ज़्यादातर नकारात्मक कल्पनाएं ही उठती हैं जिसका स्वरूप बड़ा ही दुःखद व डरावना हो जाता है।

मन में उठने वाली कल्पनाओं को यदि समय रहते ध्यान नहीं दिया गया या काट-छाँट नहीं की गई तो ये अपना एक नया संसार ही गढ़ लेंगी। बार-बार उठने वाली ये कल्पनाएं एक ठोस एवं दृढ़ आकार ले लेती हैं। जैसे यदि कोई स्वयं के प्रति यह कल्पना करके बैठे कि वो संसार का अति दुःखी व असहाय प्राणी है, इस संसार में उसे अपना कहने लायक कोई नहीं है, ऐसी कल्पना से व्यक्ति तो दुःख को ही आमंत्रित कर रहा है ना। जो चीज़ है नहीं उसे बार-बार सोचना भी अपने आप को दुःख देना है। नकारात्मक कल्पनाएं करते-करते आज मनुष्य फोबिया का शिकार हो गया है। जिसमें बेवजह डर रूपी कल्पना डराती रहती है।

कल्पना शक्ति यदि मानवीय चेतना की दिव्य क्षमता के साथ जुड़ जाये तो उससे आश्चर्यजनक और अद्भुत चीज़ों का सृजन किया जा सकता है। कल्पनाओं के साथ बुद्धि का मिलना वैज्ञानिक एवं तकनीकि प्रगति के नये द्वार खोलता है। जब कल्पना को इमैजिनेशन से निकाल विज़ुअलाइज़ेशन की तरफ ले जाते हैं, तो वो विज़ुअलाइज़ेशन हमें एक स्थिर चित्त इंसान की श्रेणी में खड़ा कर सकता है। कल्पनाओं का स्तर देखकर ही किसी व्यक्ति, समाज के विकास की पहचान की जा सकती है। ऊँची कल्पना हो और जीवन शैली निकृष्ट हो, ये तो संभव नहीं है ना। भारत भूमि जब स्वर्ण युग सतयुग था, उन दिनों वहां के निवासी कैसा जीवन जीते थे, यदि उसे कल्पनात्मक रूप से लिया जाए तो हम कह सकते हैं कि वो एक अति श्रेष्ठ कल्पना होगी, जिसमें सभी लोग सार्थक जीवन जीते थे।

जीवन में विषय-विलास, राग-रंग की कल्पनाएं ज़हर बनकर घुलने लग जाती हैं, यहां से पतन एवं पराभव का अंतहीन सिलसिला चल पड़ता है। इससे अपार एवं असीमित ऊर्जा का क्षरण हो जाता है। आज की पीढ़ी को यदि देखा जाए तो पूरी पीढ़ी हमेशा भोग-विलास, गंदे गीत, चुटकुलों, गंदी फिल्मों को देखकर ऐसी कल्पनाएं करते हैं जो ऊर्जा के रूप में परिवर्तित होकर शरीर को क्षीण कर देती हैं। इसलिए आज के बच्चे पंद्रह साल के उम्र में ही पच्चीस साल के लगते हैं, सबके चेहरे का तेज और ओज खत्म हो गया, कारण नकारात्मक कल्पनाएं, भोग-विलासी कल्पनाएं। तो आइये हम सभी कल्पना को एक सकारात्मक रूप देकर सबके लिए एक ऐसा संदेश छोड़ें कि जब भी कोई कल्पना करे तो हमेशा श्रेष्ठ जीवन का करे।

मनुष्य की मंसा हमेशा कुछ नया करने की होती है। नया अर्थात् जो सबसे अलग हो, लेकिन उसकी शुरुआत वो ऐसे जगह से करता है जहां किसी का अंतर्विरोध नहीं होता, किसी तरह की कोई असमंजस वाली स्थिति नहीं होती। वो कहता कम है लेकिन मन में उसके लिए कल्पनाएं बहुत करता है। और यही कल्पनाओं का संसार उसे एक दिन सफल व असफल बना देता है।

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: जब मैं ज्ञान में आया तो मेरी पवित्रता प्रथम वर्ष में ही बहुत अच्छी हो गई थी। मुझे बीस वर्ष ज्ञान में हो गये हैं। अब अचानक अपवित्र संस्कार इमर्ज हो रहे हैं। मैं परेशान हूँ, ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर: जब किसी भी आत्मा को ईश्वरीय ज्ञान मिलता है और आत्मा इस नशे में रहने लगती है कि मुझे तो भगवान मिल गये। मन में ये उमंग भी रहता है कि मुझे पतित पावन शिव बाबा की आज्ञा पर चलकर पवित्र बनना है और पवित्रता की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो पवित्रता सरल लगती है। परन्तु जैसा आप जानते हैं कि यह अपवित्रता 63 जन्मों की है। किसी में ज्यादा है, किसी में कम। आत्मा तब तक पवित्र नहीं बन सकती जब तक उसे सर्वशक्तिवान की शक्तियां न मिले। सम्पूर्ण पवित्रता के लिए सम्पूर्ण योग होना आवश्यक है। योग का चार्ट चार घण्टे प्रतिदिन तो होना ही चाहिए। परन्तु अधिकतर ब्राह्मण यह योग की साधना नहीं कर पाते, इसलिए अपवित्रता दबी रह जाती है और बाह्य दूषित वातावरण के प्रभाव से या दूषित मनुष्यों के प्रभाव से वे संस्कार पुनः प्रकट होने लगते हैं। यही कुछ आपके साथ भी हुआ है। अतः अमृतवेले अच्छी साधना करो। पांच स्वरूपों का अभ्यास सुबह-शाम करो, भोजन की पवित्रता पर अधिक ध्यान दो व दिन में कई बार इस स्मृति में रहो कि मैं पवित्रता का सूर्य हूँ। परेशान होने की बात नहीं। याद रहे योग-साधना के बिना पवित्रता का सुख प्राप्त नहीं होगा।

प्रश्न: कृपया अष्ट रत्नों का स्पष्टीकरण कीजिए, ये आठ आत्माएं गद्दी पर बैठते हैं या ये सोलह आत्माएं हैं या चार युगल हैं?

उत्तर: हमारा यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय है, जिसका परम शिक्षक स्वयं ज्ञान का सागर है और इसमें चार विषय हैं -ईश्वरीय ज्ञान, राजयोग, श्रेष्ठ धारणाएं व ईश्वरीय सेवा। इस पढ़ाई में जो आत्माएं पास विद ऑनर होती हैं उनकी संख्या आठ है। ये ही चारों सब्जेक्ट में फुल मार्क्स लेते हैं।

ये आत्माएं ही सम्पूर्ण आत्माभिमानी अर्थात सम्पूर्ण योग-युक्त व सम्पूर्ण पवित्र तथा सम्पूर्णतया बाप समान बनती हैं। ये ही पहले चार युगल अर्थात् विश्व-महाराजन व विश्व महारानी बनती हैं, परन्तु पुनर्जन्म के बाद भी अपने टर्न पर इन्हें पुनः राज्य मिलता है। ये आठ सतयुग में राजा रानी बनते हैं, चाहे केन्द्र में चाहे राज्य में। सतयुग में भी एक केन्द्र होगा जिसके शासक को विश्व महाराजन कहेंगे बाकि आठ राजाई साथ-साथ ही चलेगी अर्थात् लगभग एक लाख के ऊपर एक राजा होगा। आपको ख्याल रहे कि पूरे सतयुग में सोलह से ज़्यादा गद्दी चलेगी क्योंकि एक राजा अपनी आयु का लगभग आधा समय ही राज्य करेगा, न कि 150 वर्ष। ये एक सौ पचास वर्ष तो उनकी आयु है। पूरे सतयुग में 108 आत्माएं केन्द्र व राज्यों में राज्य करेंगी। इन 108 आत्माओं में पहली 25 आत्माएं बहुत महान हैं।

प्रश्न: क्या अब के जोन इन्चार्ज स्वर्ग के राजा-रानी या विश्व महाराजन होंगे? क्योंकि हमारे यहां सभी की यही मान्यता है।

उत्तर: यहां सेवाओं में वास्तव में कोई पद नहीं होता। यहां तो सभी सेवाधारी हैं परन्तु कार्य सुचारू रूप से चले इसके लिए निमित्त पदों का सृजन किया जाता है। जिन्होंने सेवा में बहुत मेहनत की है व अनेक सेवाकेन्द्र खोले हैं, वे उनके संचालक हैं। कोई विशेष गुण, योग्यता या सेवा में अथक परिश्रम से ही आत्माएं सेवा की बड़ी ज़िम्मेदारी सम्भालती हैं। परन्तु सेवा के पद से भविष्य पद का सीधा सम्बन्ध नहीं है। कोई बिना पद के सेवाधारी भी विश्व महाराजन बन सकते हैं। इसमें पद नहीं, बल्कि स्थिति का महत्व है। ध्यान दें राजाई उन्हें ही मिलेगी, जिनमें - दूसरों की मात-पिता सम पालना करने के संस्कार होंगे। जो स्वराज्य अधिकारी बनते हैं, जिन्होंने कर्मेन्द्रियों के रसों को जीत लिया है। जो दिव्य बुद्धि सम्पन्न, मास्टर सर्वशक्तिवान व पवित्रता के श्रेष्ठ चरित्र से सम्पन्न हैं। जिनके द्वारा किसी न किसी तरह का सहयोग सबको मिलता है। जिनमें राजाई की रॉयल्टी है, चित्त शुभ-भावनाओं से भरा है तथा जो त्यागी व तपस्वी हैं तथा सदा ही दूसरों को आगे बढ़ाते हैं।

प्रश्न: वर्ष में तीन-चार बार अज्ञानियों के हाथ का खाना पड़ता है। तब मन में बहुत संकल्प चलते हैं, मन भारी हो जाता है। हम क्या करें?

उत्तर: इसे आपद्धर्म कहते हैं। क्योंकि आप गृहस्थ में व कारोबार में रहते हैं इसलिए ऐसी बातें आपके सामने आती हैं। आप भारी न हों। भोजन जब सामने आये, उसे दृष्टि देते हुए लगभग इक्कीस बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। इससे भोजन पवित्र हो जाएगा और उसका आप पर निगेटिव प्रभाव नहीं पड़ेगा।

प्रश्न: मेरी खाने-पीने में बहुत आसक्ति है। मुझे हर समय नया-नया खाना चाहिए। मुझे सेंटर में भी रहना है...उसकी भी विधि जानना चाहती हूं व इस खान-पान की आसक्ति से भी मुक्त होना चाहती हूँ।

उत्तर: आपको सेंटर पर रहना हो तो त्याग भरा जीवन अपनाना ही पड़ेगा। आत्मा को यदि आप अलौकिक भोजन से तृप्त करने लगें तो सूखा भोजन भी आपको आनंदित करेगा। पेट को क्या पता कि क्या आ रहा है। ये स्वाद तो जीभ तक ही सीमित है। आपको समर्पित होना है तो प्रतिदिन चार घण्टे योग करो। आप अभ्यास करो कि मैं आत्मा कर्मेन्द्रियों की मालिक हूँ -इससे चित्त अनासक्त होता जायेगा। साथ ही साथ मन को भी तैयार करो कि सब कुछ खाना है और जीभ के रस को छोड़ना भी है। योगी कभी भी रसों के वश नहीं होते। योगियों के वश माया रहती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

DD डायरेक्ट फ्री दूरदर्शन DTH पर GOD TV में और DISH TV पर भी फ्री पीस ऑफ माइंड चैनल शाम 7.30 से रात्रि 10.00 बजे तक देख सकते है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104-777111/9414151111